

Padma Shri



DR. BIRUBALA RABHA

Dr. Birubala Rabha is a Social Activist of Assam. She is an anti-witch hunting crusader fighting against the social menace of witch hunting which is prevalent in Assam especially among the tribal communities and Adivasis. She was instrumental in the Assam Government passing the Prevention and Protection from Witch Hunting, Act, 2015. Dr. Rabha is symbolically a force who fights and strongly raises her voice against social evils.

2. Born on 5th Feb, 1949 to Koleya Ram Rabha and Sagarbala Rabha in the Assam-Meghalaya border of remote Thakurvilla village under Lakhipur Police Station of Goalpara District of Assam, Dr. Rabha belongs to Pati Rabha (ST) Community. She studied till Class V and was married off to Chondicharan Rabha, a local farmer in the year 1964.

3. Dr. Rabha's struggle against the process of witch-hunting began when her son was branded as a witch and diagnosed to die within three days because he had an intellectual disability. This diagnosis was her initial trigger to fight for their rights. Her first public meeting against witch hunting was on Sep 15, 2001 in Dodan Manch, Goalpara. Rabha's family was isolated by the villagers in Thakurvilla, Goalpara for 3 years when she started to raise her voice against witch hunting. She faced life threatening attacks and was chased many times at night by angry mobs. She had to run through jungles to save herself.

4 Dr.Rabha formed Mission Birubala in 2012 and is the Chief Adviser of the organization. The organization creates awareness among people against witch hunting and superstitious beliefs and provides rehabilitation to the victims. It promotes women education and scientific temperament. The Mission has been successful in saving 55 victims till now in Majuli, Kokrajhar, Goalpara and Tinsukia districts.

5. Dr.Rabha received numerous awards and honors. Under the project '1000 women', she was nominated for Nobel Peace Prize in 2005 by The Swiss Peace, Switzerland. She received 'Real Heroes' award by IBN-18 Network, Reliance in 2011 in Mumbai; Sarnajpran Sarbesviar Datta memorial award by SI Foundation, Jorhat, Assam; Urmila Das memorial Award in 2011; Signature Award (Sarva Guna Sampanna Nari Award in 2012; Birongona Mula Gabharu Award at Sibsagar in 2012; Honorary Doctorate (Ph D) by Gauhati University on March 30, 2015; Sudha Kontho Dr. Bhupen Hazarika Sanghati Award by AASU (All Assam Students Union) in 2015; UN Brahma Soldier of Humanity Award in 2015; True Legend Award in 2015 and Stree Udyamita Samman in 2016. She was honoured with International Prize For Women's Creativity in Rural Life by Women's World Summit Foundation (WWSF), Geneva in 2018.



डॉ. बीरुबाला राभा

डॉ. बीरुबाला राभा असम की एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह डायन—लांछन विरोधी योद्धा हैं और वह विशेष रूप से असम के जनजातीय समुदायों और आदिवासियों में प्रचलित डायन लांछन के सामाजिक खतरे के खिलाफ लड़ रही हैं। उन्होंने असम सरकार द्वारा डायन लांछन (प्रतिषेध, निवारण और संरक्षण) अधिनियम, 2015 को पारित करने में अहम भूमिका निभाई थी। डॉ. राभा शक्ति की प्रतीक हैं जो सामाजिक बुराईयों का मुकाबला करती हैं और उनके विरुद्ध दृढ़ता से अपनी आवाज उठाती हैं।

2. 5 फरवरी, 1949 को असम के गोआलपाड़ा जिले के लखीपुर पुलिस थाने के अंतर्गत असम—मेघालय सीमा पर स्थित सुदूर ठाकुरविला गांव के श्री कोलेया राम राभा और श्रीमती सागरबाला राभा के घर जन्मी, श्रीमती राभा, पाटी रभा (अनुसूचित जनजाति) समुदाय से हैं। उन्होंने पांचवी कक्षा तक पढ़ाई की और वर्ष 1964 में उनका विवाह स्थानीय किसान चोंडीचरण राभा से हुआ।

3. डॉ. राभा का डायन—लांछन बुराई के खिलाफ संघर्ष तब शुरू हुआ, जब उनके बेटे को डायन बताया गया और उसके तीन दिन के भीतर मरने की बात कही गई। उनका बेटा बौद्धिक रूप से अक्षम था। यहीं से अधिकारों के लिए उनकी लड़ाई शुरू हुई। डायन के लांछन के विरुद्ध उनकी पहली जनसभा 15 सितंबर, 2001 को डोडनमंच, गोआलपाड़ा में हुई थी। जब राभा ने डायन—लांछन के खिलाफ आवाज उठानी शुरू की तो ठाकुरविला, गोआलपाड़ा के ग्रामीणों ने उनके परिवार का तीन वर्ष तक के लिए बहिष्कार कर दिया। उन पर जानलेवा हमले किए गए और गुस्साई भीड़ ने रात को कई बार उनका पीछा किया। उन्हें अपनी जान बचाने के लिए जंगल में शरण लेनी पड़ी।

4. डॉ. राभा ने 2012 में मिशन बिरुबाला का गठन किया और वह संगठन की मुख्य सलाहकार हैं। संगठन लोगों में डायन—लांछन और अंधविश्वास के प्रति जागरूकता पैदा करता है और पीड़ितों को पुनर्वास प्रदान करता है। यह महिला शिक्षा और वैज्ञानिक नजरिए को बढ़ावा देता है। यह मिशन अब तक माजुली, कोकराझाड़, गोआलपाड़ा और तिनसुकिया जिलों में 55 पीड़ितों को बचाने में सफल रहा है।

5. डॉ. राभा को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए। प्रोजेक्ट '1000 वुमन' के तहत, उन्हें द स्विस् पीस, स्विट्ज़रलैंड द्वारा वर्ष 2005 में नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित किया गया था। उन्हें वर्ष 2011 में मुंबई में आइबीएन—18 नेटवर्क, रिलायंस द्वारा 'रियल हीरोज'; एसआई फाउंडेशन, जोरहाट, असम द्वारा सरनजप्राण सरबेस्वियर दत्ता स्मृति पुरस्कार; 2011 में उर्मिला दास मेमोरियल अवार्ड; 2012 में सिग्नेचर अवार्ड (सर्वगुण सम्पन्न नारी) पुरस्कार; 2012 में सिबसागर में बिरोनगोना मुलागभरु पुरस्कार; 30 मार्च, 2015 को गुवाहाटी विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट (पीएचडी); 2015 में आसू (ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन) द्वारा सुधाकोंठो डॉ. भूपेन हजारिका संघटी पुरस्कार; 2015 में यूएन ब्रह्मा सोल्जर ऑफ ह्यूमैनिटी अवार्ड; 2015 में टू लीजेंड अवार्ड और वर्ष 2016 में स्त्री उद्यमिता सम्मान प्रदान किया गया। उन्हें वर्ष 2018 में वीमेन वर्ल्ड समिट फाउंडेशन, जिनेवा द्वारा ग्राम्य जीवन में महिलाओं की रचनात्मकता के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।